हजारीमल मुनि स्मृति ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०४०)

मुख्य टाइटल

निवेदन

समर्पण

ग्रन्थ का कलापक्ष

मदीयम्

प्रधान सम्पादक का निवेदन

प्रथम अध्याय – जीवन, संस्मरण, श्रद्धांजलि और परम्परा दर्शन ---------------------------- १-२५४

मुनि श्रीहजारीमलजी-जीवनवृत्त -- १

संस्मरण और श्रद्धाञ्जलियाँ -- ६५

संत कवि आचार्य जयमल्लजी-कृतित्व और व्यक्तित्व -------------------------------------- १३७

आचार्य श्रीरायचन्द्रजी म. की साहित्यसर्जना -- १५६

आशाकिरण आचार्य आसकरणजी -- १५९

मुनि रूपचन्दजी – एक खोजपूर्ण आलेख -- १६५

तिलोकऋषिजी की काव्य-साधना -- १६८

कविवर्य अमीऋषिजी और अमृत काव्यसंग्रह -- १७४

दीर्घदृष्टि लोंकाशाह -- १७९

लोंकाशाह मत की दो पोथियाँ -- १८४

स्थानकवासी परम्परा की विशेषताएँ -- १८९

स्थानकवासी जैन समाज रा साचा सपूत -- १९४

लोंकागच्छ की साहित्यसेवा -- २०३

श्रीलोंकागच्छ की परम्परा और उसका अज्ञात साहित्य -------------------------------------- २१४

द्वितीय अध्याय – दर्शन और धर्म -- २५५-५२८

अनन्य और अपराजेय जैनदर्शन – श्री ज्ञान भारिल्ल -------------------------------------- २५७

कुछ विदेशी लेखकों की दृष्टि में जैन धर्म और भगवान महावीर – श्री महेन्द्र राजा ----------- २७१

आर्हत आराधना का मूलाधार-सम्यग्दर्शन – मुनि श्री मल्लजी ------------------------------- २८०

जैनधर्म के नैतिक सिद्धान्त – डॉ. ईश्वरचन्द शर्मा -- २८९

जैन साधना – श्री रिषभदास रांका -- ३०३

जैनाचार की भूमिका – डॉ. मोहनलाल महेता -- ३१०

महावीर और उनके सिद्धान्त – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन -------------------------------------- ३१८

सर्वधर्मसमभाव और स्याद्वाद – आचार्य श्री तुलसी -- ३२१

स्याद्वाद और अहिंसा – श्री सौभाग्यमल जैन -- ३२५

जैनदर्शन और विज्ञान – श्री कन्हैयालाल लोढ़ा -- ३२८

सप्तभंगी – श्री रूपेन्द्रकुमार पगारिया -- ३४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनेकान्तवाद – श्री सुरेश मुनि शास्त्री -- ३४९
जैनदर्शन – श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री -- ३५७
दर्शन और विज्ञान के आलोक में पुद्गलद्रव्य – श्री गोपीलाल अमर -------------------------- ३६८
जीवतत्व-विवेचन – पं. मिलापचन्द कटारिया --- ३८९
भारतीय दर्शनों में आत्मवाद – श्री रतनलाल संघवी -- ३९५
कर्म-स्वरूप और बंध – श्री राजकुमार जैन --- ४०२
प्रश्नोत्तर-अपरिग्रह – श्री जैनेन्द्रकुमार -- ४०५
जैनधर्म में भक्तियोग – पं. चैत्रसुखदास न्यायतीर्थ -- ४०८
नियति का स्वरूप – डॉ. कन्हैयालाल सहल -- ४१५
भिक्षु जमाली और बहुरत दृष्टिवाद – मुनि श्री सुशीलकुमारजी ------------------------------ ४२३
धर्म का वास्तविक स्वरूप – डॉ. भुवनेश्वरनाथ मिश्र --------------------------------------- ४२६
गुणस्थान – पं. हीरालाल जैन -- ४२९
अनेक तत्त्वात्मक वास्तविकतावाद और जैनदर्शन – मुनि श्री महेन्द्रकुमार ------------------- ४२६
हिन्दू तथा जैन साधुपरम्परा एवं आचार – श्री देवनारायण शर्मा ---------------------------- ४४०
सकाम धर्म-साधना – श्री जुगलकिशोर मुख्तार --- ४४८
जैन दर्शन में संलेखना का महत्वपूर्ण स्थान – श्री दरबारिलाल कोठिया --------------------- ४५४
सत्यं शिवं सुन्दरम् – श्री रमेश उपाध्याय -- ४६६
मनुष्य जाति का सर्वोत्तम आहारः शाकाहार – श्री शिखरचन्द्र कोचर ------------------------ ४७०
वर्णों का विभाजन – डॉ. सत्यकाम वर्मा --- ४७२
जैन दृष्टिसे मनुष्यों में उच्च-नीच व्यवस्था का आधार – पण्डित श्री बंशिधर ---------------- ४७४
वेदोत्तर काल में ब्रह्मविद्या की पुनर्जागृति – श्री जयभगवान जैन ---------------------------- ४८४
जैनमतानुसार अभाव प्रमेय-मीमांसा – साध्वी श्री निर्मलाश्रीजी ------------------------------ ४९४
श्रावक धर्म – डॉ. इन्द्रचन्द्र शास्त्री -- ४९९
जन शासन और जिनशासन – मुनि श्री सन्तबालजी -- ५१४
सत्याग्रह और पशु – काका कालेलकर -- ५१७
पुरुष प्रजापति – श्री वासुदेवशरण अग्रवाल -- ५१९
तृतीय अध्याय – संस्कृति, समाज, इतिहास और पुरातत्त्व -------------------------------- ५२९-७१२
भारतीय संस्कृति का वास्तविक दृष्टिकोण – डॉ. मंगलदेव शास्त्री ---------------------------- ५३१
आर्यों से पहले की भारतीय संस्कृति – डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी ------------------------------- ५३९
जैन श्रमणसंघ की शासनपद्धति – मुनि श्री कल्याणविजयजी गणि ------------------------- ५४३
जैन संस्कृति में समाजवाद – साध्वी श्री उमराँवकुँवरजी ------------------------------------ ५५१
प्राचीन भारत की जैन शिक्षणपद्धति – डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन ------------------------------- ५५५
मोक्षमार्गस्य नेतारम् के कर्त्ता पूज्यपाद देवनन्दि – डॉ. नथमल टाटिया ---------------------- ५६३
कर्णाटक के जैन शासक – पं. भुजबली शास्त्री --- ५७०
उपनिषद् पुराण और महाभारत में जैनसंस्कृति के स्वर – मुनि श्री नथमलजी -------------- ५७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैशालीनायक चेटक और सिन्धु सौवीर का राजा उदायन – आचार्य मुनि श्री जिनविजयजी -- ५७९
भारतीय संस्कृति में सन्त का महत्त्व – श्री कुसुमवतीजी ---------------------------------- ५९५
जैनगाम और नारी – श्री कलावती जैन --- ६००
श्री एल. पी. जैन और उनकी संकेतलिपि – श्री नथमल दुग्गड तथा श्री तेजसिंह राठोड़ ------ ६०३
दक्षिण भारत में जैनधर्म – श्री श्रीरंजन सूरिदेव --- ६०६
वृषभदेव तथा शिव संबंधी प्राच्य मान्यताएँ – डॉ. राजकुमार जैन --------------------------- ६०९
राजस्थान में प्राचीन इतिहास की शोध – डॉ. देवीलाल पालीवाल ---------------------------- ६३०
कालिदास और विक्रम पर एक विचार – श्री सूर्यनारायण व्यास ---------------------------- ६४१
महावीर और बुद्ध जन्म व प्रव्रज्यायें – मुनि श्री नगराजजी -------------------------------- ६४३
महावीर द्वारा प्रचारित आध्यात्मिक गणराज्य और उसकी परंपरा – भद्रीप्रसाद पंचोली -------- ६४६
रइधू साहित्य की प्रशस्तियों में ऐतिहासिक व सांस्कृतिक सामग्री – प्रो. राजाराम जैन ------ ६५४
धौलपुर का चाहमान चण्डमहासेन का संवत् ८९८ का शिलालेख – रत्नचन्द्र अग्रवाल ---------- ६६६
प्राचीन वास्तुशिल्प – पं. भगवानदास जैन --- ६६९
महापंडित टोडरमलजी – श्री अनूपचन्द -- ६७३
तुम्बवन और आर्य वज्र – श्री विजयेन्द्र सूरिश्वरजी--- ६७७
देबारी के राजराजेश्वर मन्दिर की अप्रकाशित प्रशस्ति – रत्नचन्द्र अग्रवाल -------------------- ६८६
राजस्थानी चित्रकला – प्रो. परमानन्द चोपल -- ६९३
मध्य भारत का जैन पुरातत्त्व – श्री परमानन्द जैन --- ६९८
चतुर्थ अध्याय – भाषा और साहित्य -- ७१३-९१६
जैन आगमधर और प्राकृत वाङ्मय – मुनि श्री पुण्यविजयजी -------------------------------- ७१५
जैनवाङ्मय के योरपीय संशोधक – श्री गोपालनारायण बहोरा -------------------------------- ७४५
रामचरित सम्बन्धी राजस्थानी जैन साहित्य – श्री अगरचन्द नाहटा ------------------------ ७४९
जैन कृष्ण साहित्य – श्री महावीर कोटिया -- ७५४
राजस्थानी जैन सन्तों की साहित्य-साधना – डॉ. कस्तुरचन्द कासलीवाल -------------------- ७६३
तीन अर्धमागधी शब्दों की कथा – डॉ. हरिवल्लभ चुनीलाल भायाणी ------------------------ ७७१
जैनशास्त्र और मंत्रविद्या – श्री अम्बालाल प्रेमचन्द शाह ------------------------------------ ७७३
काहल शब्द के अर्थ पर विचार – श्री बहादुरचंद छावड़ा ------------------------------------ ७८०
राजस्थानी साहित्य में जैन साहित्यकारों का स्थान – श्री पुरुषोत्तम मेनारिया ---------------- ७८१
प्राचीन दिगम्बरीय ग्रंथों में श्वेताम्बरीय आगमों के अवतरण – पं. बेचरदास जीवराज दोशी --- ७९१
संस्कृत कोषसाहित्य को आचार्य हेमचन्द्र की अपूर्व देन – श्री नेमिचन्द्र शास्त्री -------------- ७९४
अपभ्रंश जैन साहित्य – प्रो. देवेन्द्रकुमार जैन --- ८०४
आगमसाहित्य का पर्यालोचन – मुनि श्री कन्हैयालालजी ------------------------------------ ८०९
अजमेर-समीपवर्ती क्षेत्र के कतिपय उपेक्षित हिन्दी साहित्यकार – मुनि श्री कान्तिसागरजी ---- ८२५
कर्णाटक साहित्य की प्राचीन परम्परा – वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री ---------------------------- ८५६
काव्य में अध्यात्म – श्री सुशीलकुमार दिवाकर -- ८६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन कथा साहित्य – डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन -- ८६५
आयुर्वेद का उद्देश्य-संयमसाधना – पं. कुन्दनलाल जैन ------------------------------------- ८६७
एक जैनतर सन्तकृत जम्बू चरित्र – श्री भँवरलाल नाहटा ---------------------------------- ८७०
पउमचरियं के रचनाकाल सम्बन्धी कतिपय अप्रकाशित तथ्य – डॉ. के. ऋषभचन्द्र --------- ८७७
जैन कथासाहित्य-एक परिचय – प्रो. श्रीचन्द्र जैन -- ८८४
मेवाड़ में रचित जैन साहित्य – श्री शान्तिलाल भारद्वाज ------------------------------------ ८९०
अपभ्रंश का विकास – डॉ. गोवर्धन शर्मा-- ९००
पंचम अध्याय – अंग्रेजी विभाग --- १-९४
Jainism-A Great religion – Prof. N. G. Suru -- 1
Message to Humanity – Prof. G. R. Jain --- 4
A Survey of Jaina Religion and Philosophy – Dr. Nathmal Tatia ------------------ 8
The Pre-Aryan Sharmanic Spiritualism – Shri Ramchandra Jain ------------------ 12
Ahimsa, the Basic Social Ethic – Dr. Bool Chand -------------------------------- 27
The Doctrines of Jainism – K. B. Jindal --- 30
The Concepts of Parisaha and Tapa in Jainism – Dr. Kamal Chand Sogani --------- 45
Nature of Divinity in Jaina Philosophy – T. G. Kalghatgi ------------------------ 63
The non-Violence of Mahatma Gandhi and Gita – Miss Ruth M. Well --------------- 68
Some Aspects of Jain psychology as revealed in the Bhagawati Sutra – Dr. J. C. Sikdar --- 75
The Vratas other than Ahimsa-as Propounded in Jainism – H. Bhattacharya -------- 88
Shramadan or Voluntary manual labour-the old way – Prof. N. V. Vaidya ---------- 94

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org